विनाश से कल्याण की ओर

नीलम परवीन साहेबा कानपुर

अल्पावस्था से आज तक और कदाचित जीवन के अन्तिम क्षणों तक धार्मिक परिचर्चाओं, धर्म ग्रन्थों, प्रवक्ताओं, संरक्षकों एवं शिक्षकों द्वारा जब हुसैन (अ०) का नाम आया है एक ही बात सुनने को मिली है।

"अगर हुसैन (अ०) न होते तो इस्लाम नहीं होता, इन्सानियत का ख़ातमा यकीनी था। हुसैन सब्रोसबात के जौहर दिखा कर ज़ेहने इन्सानी को तर्जे हयात बख़्शा, हुसैन (अ०) ने करबला के तपते हुये सहरा में अजीमुश्शान और अदीमुन्नजीर क़ुरबानी पेश करके यह साबित कर दिया कि रहती दुनिया तक के इन्सानों अपनी हक़ शनास निगाहों को मेरी जानिब मोड़ कर देखो मैं तुम्हें जबाने बे जबानी के जरिये ये बताना चाहता हूं कि बातिल ख्वाह कितना ही ताक़तवर क्यों न हो, साहिबे तख़्तो ताज क्यूँ न हो मालिके सीमों ज़र क्यों न हो लेकिन अगर वह हक़ से टकराता है तो उस के पाए तख़्त लर्ज़ा बर अन्दाम हो जाते हैं, ताजे शाही चकना चूर हो जाता है उसकी दौलत उसी की कब्र बन जाती है। हुसैन का यह दर्स ऐसा था कि सदियाँ गुजर गई। मुवर्रेखीन के कलम आगे बढ़े, मुफस्सेरीन के लबहाए तारीख़ गो कांपे सब ने यकजबान होकर कहा हुसैन अजमतों के आफताबे नीमरोज का नाम है। यज़ीद पस्तियों की डूबती शाम का नाम है"।

मैंने भी कर्बला की दुःखद गाथा का अध्ययन किया है और जहाँ तक मेरे विचार शक्ति ने कार्य किया मैंने "ट्रेजिडी आफ करबला" के तत्वों को समझने का भी प्रयत्न किया है। मुझे करबला के एक शूर-वीर महान योद्धा और विजयी ने अत्यधिक प्रभावित किया है। यह योद्धा कोई और नहीं हुसैन (अ०) का अपना बेटा था जिसने किसी रण-क्षेत्र में कभी युद्ध कौशल नहीं दिखाया था, कभी घुड़ सवारी नहीं की थी, किसी से युद्ध विद्या नहीं सीखी थी परन्तु जब वह रण-क्षेत्र में तपती हुई धूप में आया तो बाप की पवित्र गोद में सवार था उसके हाथ में कोई शस्त्र न था बल्कि वह स्वयं शस्त्र बन कर आया था (जैसा कि यज़ीद की सेना और उसके सेनानियों ने अनुभव किया था) हाँ, वह था हुसैन का 6 माह का लाल अली असग़र। एक वाक़ेया मैं उसके युद्ध-कौशल का भी चित्रण कर दूँ। हुसैन (अ०) ने इस योद्धा का परिचय स्वयं कराया अभी वाक्य पूरा भी नहीं हुआ था कि एक तीर उस बच्चे की गरदन पर लगा तीर लगते ही बच्चे के प्यासे और उदास अधरों पर मुस्कराहट की एक रेखां खिच गई मानों उसने मृत्यु को मुँह चिढ़ा दिया यही एक वह मुस्कुराहट थी जिसने बड़े-बड़े निर्दयी योद्धाओं को सर झुकाने पर बाध्य कर दिया। वह बहादुर सिपाही अमर हो गया अपने अनोखे रण-प्रदर्शन से। एक विजयी की भाँति वह नन्हा योद्धा युद्ध-क्षेत्र से वापस पलटा। मैंने सहस्त्रों बार इस बचे के बारे में पढ़ा, सुना और लोगों को सुनाया और बहुधा विचार किया कि यदि यज़ीद को कोई बैर था तो हुसैन से था किन्तु इस बच्चे ने उसका या उसके साथियों का क्या बिगाड़ा था जिसकी प्यास का उत्तर त्रिपक्षीय तीर से दिया गया। हुसैन की उन बहिनों ने क्या बिगाड़ा था जिन का घर लूटा गया। अबलाओं और दोषरहित बच्चों के साथ ऐसा अमानुषिक व्यवहार क्यों किया गया। अन्ततः मैं इस परिणाम पर पहुंची कि यज़ीद वास्तव में केवल हुसैन (अ०) का शत्रु नहीं था बल्कि उसकी शत्रुता रसूल से थी। इस्लाम के उद्देश्य नियमों और तथ्यों से थी। कुल मिलाकर वह मानवता का शत्रु था। वह चाहता था कि हुसैन भी मिटें साथ ही वह सभी कुछ मिट जाए जो एक सुसज्जित एवं सुगठित संविधान के रूप में हुसैन के नाना रसूल अल्लाह (स०) मानवता के हितों की रक्षा के लिए, प्रेम, सत्य और बन्धुत्व के लिये छोड़ गये थे। यज़ीद हिंसक प्रवृत्ति का शिकार होकर वही कर बैठा जो अधिकतर मन्द-वृद्धि के व्यक्ति करते हैं। नीति का विरोधी नीतिज्ञ से लड़ बैठा, मानवता का बैरी पूजनीय मनुष्य से टकरा गया, राज्य का लोभी सन्त से जा भिड़ा, परिणाम यह हुआ कि हुसैन महानता के गगन के पूर्णिमा

(शेष पेज नं0 27 पर....................)

सब इश्क़े इलाही की मेअ्राज पर थे। यह फ़ना फ़िल्लाह अफ़राद की ज़माअत थी यह मौत के भूकों का गरोह था और शहादत के प्यासों का जर्गा ऐसे लोग जो सुब्ह से अस्र तक मैदान में जमे रहे ताकि उनकी मौत को इतिफाक़ी हादिसा न बनाया जा सके। न उनके ख़ून से ज़ालिम अपनी आस्तीन व दामन को पाक कर सके, हाँ ! हुसैन (अ0) जुल्म के तमाम हथकण्डों से वाफ़िक थें करबला की चटियल रेती पर हुसैन (अ0) का खून गिरा। बच्चे, बूढ़े, जवान सब के लहू से ज़मीन लालज़ार बनी मगर दरहक़ीक़त यह सारा खून इस्लाम के नहीफ़ व नाज़ार जिस्म में दाखिल होकर उसे ज़िन्दा व ताबिन्दा बना गया। इस्लाम जिसकी सूरत भी मस्ख़ हो चुकी थी इंसान की अपनी शिनाख़्त की क़सौटी बन गया और निफ़ाक़ के भंवर से उसे हमेशा के लिये रिहाई मिल गयी। हुसैनीयत अब इस्लाम की शिनाख़्त हो गयी है और यज़ीदियत कुफ़्र व निफ़ाक़ की अलामत है।

पेज नं0 34 का बक़िया...........

का चन्द्र बन गये और सदा सदा के लिये मानव-मन-मस्तिष्कको अपनी शीतलता प्रदान करते रहेंगे। यज़ीद जो धनवान था, मुकुटधारी था, राज्य सेना, प्रासाद धन-धान वाला था, गुमनामी के अंधकार में डूब कर मिट गया। गांधी हों या टैगोर,राधाकृष्णन हों या शंकराचार्य सभी के लिये हुसैन का व्यक्तित्व पूजा के योग्य है। मैं महात्मा गांधी के शब्दों में एक बार फिर महान हुसैन, सच्चे हुसैन, अहिंसा के पुजारी व बन्धुत्व के मार्ग दर्शक हुसैन को श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ।

''हुसैन हम भारत-वासियों के लिए स्वतंत्रता-संग्राम के सेनापति की तरह हैं, मैंने कर्बला के हीरो की जीवनी का गूढ़ अध्ययन किया है और इससे मुझको पूर्ण विश्वास हो गया है कि भारत का यदि कल्याण हो सकता है तो हमें हुसैनी उसूलों पर चलना होगा''।

पेज नं0 13 का बाक़िया..........

हो जाएगा कि सचमुच पैग़म्बर[स0] और पैग़म्बर[स0] के घराने वाले न कभी तुमको भूले ओर न तुम को कभी नज़रअन्दाज़ किया गया। इमाम हुसैन[अ0] ने तुमको भी अपने आख़िरी वक़्त में याद किया था और तुम्हारे बीच बसने की इच्छा व्यक्त की थी। विश्वास मानों अगर हुसैन[अ0] यहाँ आने पाते तो तारीख़े आलम (विश्व इतिहास) का धारा मुड़ गया होता।

हरि इच्छा, करबला के शहीद का मनोरथ क्यों कर पूरा कर रही है।

सोगवारो! हुसैन[अ0] तो करबला में तीन दिन के भूखे प्यासे शहीद कर डाले गये। आपकी लाश घोड़ों की टापों से रौंद डाली गयी।

आपका सर भाले की नोक पर दरबदर फिराया गया। लेकिन परमशक्ति को हुसैन[अ0] की बात का बड़ा पास (लिहाज़) है। देखो हुसैन[अ0] तो हिन्दुस्तान तशरीफ़ नहीं लाए मगर उनका ताज़िया हर साल आता है। दुलदुल, पैग़म्बर[स0] के कांधे पर बैठने वाले की सवारी की शान दिखाता है। अब्बास तो फुरात के किनारे शाने कटा के आराम कर रहे हैं। लेकिन आज भी अब्बास[अ0] का अलम नगर–नगर गांव–गांव गश्त करता है।

क़ासिम बिन हसन[अ0] तो जवानी की नींद सो गये लेकिन उनकी मेंहदी अब भी उठायी जाती है। 6 महीने के अली असग़र[अ0] तो हुरमुला के तीर का निशाना हो गये लेकिन उनका गहवारा (उनका पालना) उनके बेज़बान और मज़लूम और पीड़ित होने का मूक प्रचारक है।

हुर के वृतान्त को ध्यान से सुनो और समझो कि हुसैन[अ0] दुश्मन को क्योंकर दोस्त, बना लेते थे। और अपने त्याग भाव और सौजन्य से कैसे मनमोह लिया करते थे।

